145
वाँ अंक

ISO 9001:2008

जून-2011

ज्येष्ठ-आषाढ़ संवत् 2068 शक संवत् 1933

ज्योतिष मंथन

भारतीय प्राच्य विद्याओं की मासिक पत्रिका

मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के।
पाहुन ज्यौं आये हों, गाँव में, शहर के ।।

- नज़र का सच
- हथेली परिचय
- बृहस्पति और मकान योग
- आध्यात्मिक ज्योतिष चिन्तन

मूल्य : 35/-

विदेश यात्रा

कुमार विमलेन्दू

आज के भौतिक युग में विदेश यात्रा की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति की होती है। प्राचीन काल में विदेश यात्रा को कष्टकारी योग समझा जाता था। वर्तमान में विदेश यात्रा राजयोग की भाँति देखी जा रही है। व्यक्ति विदेश जाने के लिए लालायित है और ज्योतिषियों से जानने के लिए आतुर है कि उसके जीवन में विदेश जाने के योग हैं या नहीं ? उसका भाग्योदय देश में होगा या विदेश में ? क्या विदेश में सफलता प्राप्त होगी ? इत्यादि

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार लग्न या चंद्र लग्न कुण्डली में जो बलवान हो, उससे योगों का विश्लेषण किया जाता है। भाग्य स्थान से धर्म, तीर्थ यात्रा, विदेश यात्रा, सामुद्रिक यात्रा, शास्त्र ज्ञान, गुरु, पिता का सुख इत्यादि का विचार किया जाता है।

स्थान के आधार पर विदेश यात्रा का विचार: स्थान की दृष्टि से तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, नवम तथा द्वादश स्थानों को यात्रा का कारक माना गया है। तृतीय स्थान से छोटी यात्रा, चतुर्थ स्थान से स्व स्थान या मातृ स्थान, सप्तम स्थान कई बड़ी यात्रा, नवम स्थान लंबी दूरी की यात्रा और द्वादश स्थान से जल के द्वारा दूर देश की यात्रा का विचार किया जाता है। इसमें यात्रा से संबंधित ग्रहों की दृष्टि, युति, स्थिति, स्थान के स्वामियों का बलाबल तथा बली पाप ग्रहों की अहम् भूमिका होती है।

तृतीय स्थान : इस भाव से लघु यात्राओं का विचार किया जाता है। तृतीय भाव द्विस्वभाव राशि हो और उसमें शुभ ग्रहों की स्थिति-युति-दृष्टि संबंध हो तथा तृतीयेश शुभ ग्रह होकर बलवान हो, तो जातक को नौकरी या व्यवसाय के लिए बार-बार लघु यात्राएं देश या विदेश में करनी पड़ती है।

चतुर्थ स्थान : यह भाव मातृभूमि का प्रतिनिधित्व करता है। यदि चतुर्थेश शुभ ग्रह होकर बली हो और स्थिर राशि में हो एवं शुभ ग्रह से दृष्टि-युति संबंध कर रहा हो, तो जातक का स्वदेश में ही भाग्योदय होता है परंतु चतुर्थ स्थान या चतुर्थेश पीड़ित हो, तो जातक को विदेश में या घर से दूर जीवनयापन करना पड़ता है।

सप्तम स्थान : सप्तम भाव विदेश गमन का विशेष कारकत्व लिए हुए है। सप्तमेश सप्तम भाव में चर राशि में बली हो, तो जातक के जीवन में बड़ी-बड़ी यात्राओं का योग बनता है। यदि सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ नवमेश की युति हो, तो जातक विदेश में रहकर या विदेश में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करता है। ऋषि सत्याचार्य के अनुसार, यदि सप्तमेश लग्न में हो, तो जातक विदेश भ्रमण करता है और सप्तमेश द्वादश भाव में स्थित हो, तो जातक कई विदेशी शहरों की व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा करता है।

नवम स्थान : नवम भाव लंबी दूरी की यात्रा कराता है। विदेश यात्रा के लिए नवम भाव एवं नवमेश की मुख्य भूमिका होती है।

द्वादश स्थान : द्वादश स्थान लंबी सामुद्रिक यात्रा देता है। द्वादश स्थान नवम भाव से चतुर्थ स्थान है, यदि नवमेश द्वादश भाव में हो, तो इसका तात्पर्य यह है कि जातक के रहने का स्थान विदेश में होगा। यदि द्वादशेश नवम में हो, तो जातक की विदेश में भूमि सम्पत्ति होगी और जातक का विदेश में ज्यादा समय व्यतीत होगा।

तृतीय, नवम और द्वादश भावों में चर राशि हो तथा लग्नेश, भाग्येश और द्वादशेश शुभ ग्रह होकर बलवान हो तथा इनकी युति-दृष्टि-प्रतियुति हो, परिवर्तन संबंध हो, तो जातक के विदेश यात्रा का योग बनता है।

ग्रहों के आधार पर विदेश यात्रा:

सूर्य : 1. बृहद् पाराशर होराशास्त्र के अनुसार सूर्य महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो और केतु सूर्य से छठे या बारहवें भाव में हो। 2. जातक पारिजात के अनुसार पंचम भाव में सूर्य हो, तो विदेश में प्रवास होता है। 3. सारावली के अनुसार अष्टम भाव में सूर्य हो, तो जातक विदेश में भ्रमण करता है। 4. भृगु संहिता के अनुसार लग्न में सूर्य हो, तो विदेश में भाग्योदय होता है।

चंद्रमा : 1. बृहद् पाराशर होराशास्त्र के अनुसार चंद्रमा से शुक्र छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो। 2. सारावली के अनुसार नवम में चंद्रमा हो। 3. चिंतामणि चमत्कार के अनुसार द्वादश में चंद्रमा हो। 4. भृगु संहिता के अनुसार एकादश का चंद्रमा विदेश प्रवास देता है और जातक का गंधर्व विवाह होता है।

5. मानसागरी के अनुसार मेष का चंद्रमा हो।

मंगल : 1. जातक पारिजात के अनुसार चंद्रमा और मंगल यदि दशम भाव में युति करे, तो जातक को विदेश में परेशानी होती है।

2. मंगल या चंद्रमा दशम भाव में हो, तो दीर्घकाल के लिए विदेश में प्रवास होता है।

बुध : 1. बुध दशम में और चंद्रमा द्वादश में हो, तो विदेश यात्रा के योग बनते हैं। 2. चिंतामणि चमत्कार के अनुसार, चतुर्थ भाव में बुध स्थान परिवर्तन करें, तो विदेश गमन होता है।

शुक्र : 1. भृगु के अनुसार शुक्र छठे भाव में हो, तो जातक विदेश भ्रमण करता है। 2. यदि शुक्र सप्तम भाव में हो, तो जातक सुन्दर स्त्री से शादी करके विदेश में जाकर बसता है। 3. मंगल और शुक्र नवम भाव में हो, तो दो पत्नियाँ होती हैं और जातक विदेश में घर बसाता है। 4. द्वादश में शुक्र हो, तो विदेश यात्रा के योग बनते हैं।

शनि : 1. द्वादश में शनि स्थित हो तो परेशानी और अलगाव की स्थिति बनती है। व्यक्ति घर से दूर जाता है। 2. शनि और गुरु नवम भाव में स्थित होकर जातक को विदेश में अध्यापक या प्रोफेसर जैसे व्यवसाय को देते हैं।

राहु-केतु : 1. विदेशी वस्तुओं का कारक ग्रह राहु को माना जाता है, इसकी दशा में स्थान परिवर्तन, विवाह, विदेशी नागरिकों के साथ संबंध तथा विदेश से धन प्राप्त होता है लेकिन जातक के जीवन में असंतोष व्याप्त होता है। 2. चिंतामणि के अनुसार राहु लग्न, सप्तम या द्वादश में हो, तो जातक विदेश यात्रा करता है। 3. सारावली के अनुसार राहु-केतु सप्तम, अष्टम, नवम या द्वादश के स्वामियों से युति करे, तो विदेश यात्रा होती है। 4. बृहत् पाराशर होराशास्त्र के अनुसार राहु की महादशा में गुरु, केतु या सूर्य की अंतर्दशा हो, तो विदेश यात्रा संभव है। यदि गुरु उच्च के हों, अपनी राशि में केन्द्रगत हो या त्रिकोण की राशि में हो, तो जातक पश्चिमी देशों की यात्रा करता है।

गोचर के ग्रहों का प्रभाव: विदेश यात्रा के मुख्य कारक ग्रह शनि और राहु ग्रह हैं, विशेषकर शनि के गोचर का विशेष प्रभाव पड़ता है। विदेश प्रवास वैसे अशुभ माना गया है अत: अशुभ स्थान जैसे अष्टम भाव या द्वादश भाव का शनि गोचर में विदेश यात्रा देता है। शनि या राहु के चतुर्थ भाव से गोचर में गमन भी प्रवास देते हैं।

उपर्युक्त के अलावा नवमेश का संबंध द्वादश भाव अथवा अष्टम भाव से गोचर में बनता है, तो विदेश यात्रा होती है। इसी प्रकार गोचर में सप्तमेश का संबंध भी अष्टम या द्वादश भाव में गोचर में होता है, तो विदेश यात्रा के योग बनते हैं। इस प्रकार का विदेश यात्रा व्यवसाय या व्यापार से संबंधित होता है।

गोचर में सप्तमेश और अष्टमेश का शुभ स्थानों में संबंध की विदेश यात्रा का योग बनाता है। इसी प्रकार चतुर्थेश और पंचमेश का संबंध अष्टम या द्वादश भाव में गोचर में होता हो, तो शिक्षा के उद्देश्य से विदेश यात्रा होती है।

विशेष रूप से संबंधित ग्रहों का गोचर चर राशियों से होता है, तो विदेश यात्रा होती है।

इन दशा-अन्तर्दशा में विदेश गमन के योग बनते हैं: 1. द्वितीय, तृतीय, नवम या द्वादश भाव के स्वामी या इन भावों में स्थित ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में विदेश यात्रा होती है। 2. यदि द्वादशेश, तृतीय या नवम भाव में हो या नवम भाव पर द्वादशेश की दृष्टि हो, तो इसकी दशा-अन्तर्दशा में विदेश यात्रा होती है। 3. गोचर में शनि और गुरु का द्वादश भाव में स्थिति या द्वादशेश पर दृष्टि हो, तो विदेश यात्रा संभव है।

इसके अलावा ज्योतिष ग्रंथों की दशा-अन्तर्दशा के आधार पर विदेश यात्रा के योग बताए गए है : 1. शनि द्वादश भाव में हो, तो शनि की दशा में विदेश यात्रा होती है। 2. शुक्र सप्तम या द्वादश भाव में चर राशि में हो, तो उसकी दशा में विदेश यात्रा होती है। 3. राहु तृतीय, सप्तम, नवम या दशम भाव में हो, तो उसकी दशा में विदेश यात्रा होती है। 4. उच्च के सूर्य चंद्रमा मंगल या गुरु की दशा में विदेश यात्रा होती है। इन सभी महादशाओं में उस ग्रह की अन्तर्दशा में विदेश यात्रा होती है, जो नवम या द्वादश भाव से युक्त हों।

अन्य विशेष योग: 1. यदि अधिकतर ग्रह या द्विस्वभाव राशि में हों, तो विदेश गमन होता है। 2. लग्नेश नवम भाव में हो या नवमेश द्वादश भाव में हो तो विदेश यात्रा भाग्योदय होता है। 3. लग्नेश का पंचमेश या नवमेश से युति-दृष्टि संबंध हो या पंचम-नवम भाव में स्थित हो, उच्च शिक्षा के लिए विदेश यात्रा होती है। 4. चतुर्थेश द्वादश भाव में हो, तो विदेश में स्थायी निवास या अचल संपतित होती है। 5. सप्तमेश द्वादश भाव में हो या द्वादशेश सप्तम में हो या परस्पर युति-दृष्टि संबंध हो, तो जातक विदेश में विवाह करता है। 6. लग्नेश अथवा अष्टमेश द्वादश भाव में हों तो जातक की मृत्यु विदेश में होने की संभावना अधिक बनती है। 7. नवम भाव में उच्च के सूर्य या गुरु स्थित हों, तो विदेश गमन होता है। उपरोक्त योगों को जन्मकुण्डली में बलाबल के आधार पर विश्लेषण करते हुए जातक के विदेश गमन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया जा सकता है। ■

-17, सरदार पटेल पथ, उत्तरी श्री कृष्णापुरी, पटना-13